बक्सर के कुछ अन्य आकर्षण

रामरेखा घाट

बक्सर जिले में गंगा नदी के सुन्दर रामरेखा घाट का सम्बन्ध रामायण से जोड़ा जाता है। ऐसा माना जाता है कि ताड़का वध के पश्चात श्री राम ने स्त्री-वध के प्रायश्चित स्वरूप यहीं पर गंगा नदी में स्नान किया था। मान्यता है कि उनके द्वारा बनाया और पूजा गया मिट्टी का शिवलिंग आज भी मौजूद है, जिस पर उनके हाथों के निशान भी पड़े हुए हैं।

ब्रह्मेश्वरनाथ मंदिर

बक्सर का ब्रह्मेश्वरनाथ मंदिर भगवान शिव का सबसे पुराना मंदिर है जहाँ प्रत्येक वर्ष शिवरात्रि का बड़ा मेला लगता है।

श्रीनाथ बाबा मंदिर

बक्सर के चरित्र वन स्थित श्रीनाथ बाबा मंदिर भगवान शिव का बहुत माना हुआ मंदिर है।

बक्सर का किला

गंगा नदी के किनारे बना बक्सर का किला एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर है, जिसकी भव्य बनावट इस स्थान के शानदार अतीत का प्रमाण देती है। वर्तमान में इस भवन में जिला अतिथि गृह का संचालन होता है।

नवलखा मंदिर

बक्सर का नवलखा मंदिर शहर का एक प्रमुख आकर्षण है, जिस पर दक्षिण भारतीय मंदिरों के स्थापत्य की छाप दिखाई पड़ती है।

कैसे पहुँचें

- **सड़क मार्ग** - बक्सर पटना, गाजीपुर, बलिया आदि महत्वपूर्ण शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है।
- **रेल मार्ग** - बक्सर दिल्ली-हावड़ा रेलखण्ड का महत्वपूर्ण स्टेशन है, जो सभी बड़े शहरों से रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है।
- **वायु मार्ग** - निकटतम एयरपोर्ट पटना एयरपोर्ट है, जो 124 कि0मी0 की दूरी पर स्थित है।

BIHAR TOURISM
Blissful Bihar

Department of Tourism, Government of Bihar
Old Secretariat, Patna - 800015, Bihar (India)
Tel. : +91-612-2217045
Email : dir-tourism-bih@nic.in
Website: https://tourism.bihar.gov.in/

BIHAR
TOURISM
Blissful Bihar

पंचकोसी परिक्रमा बक्सर

बक्सर बिहार के पश्चिमी छोर पर गंगा नदी के किनारे बसा एक सुन्दर, ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व का शहर है। अनेक पुस्तकों में इस शहर का वर्णन त्रेता युग से लेकर आधुनिक कालखण्ड तक मिलता है, जहाँ इसे सतयुग में सिद्धाश्रम, त्रेता में वामनाश्रम, द्वापर में वेदगर्भा एवं कलियुग में व्याघ्रसर (बक्सर) नाम से जाना जाता है। आधुनिक कालखण्ड में भारत के इतिहास में अंग्रेजों के साथ हुई बक्सर (चौसा) की लड़ाई का विशेष स्थान है।

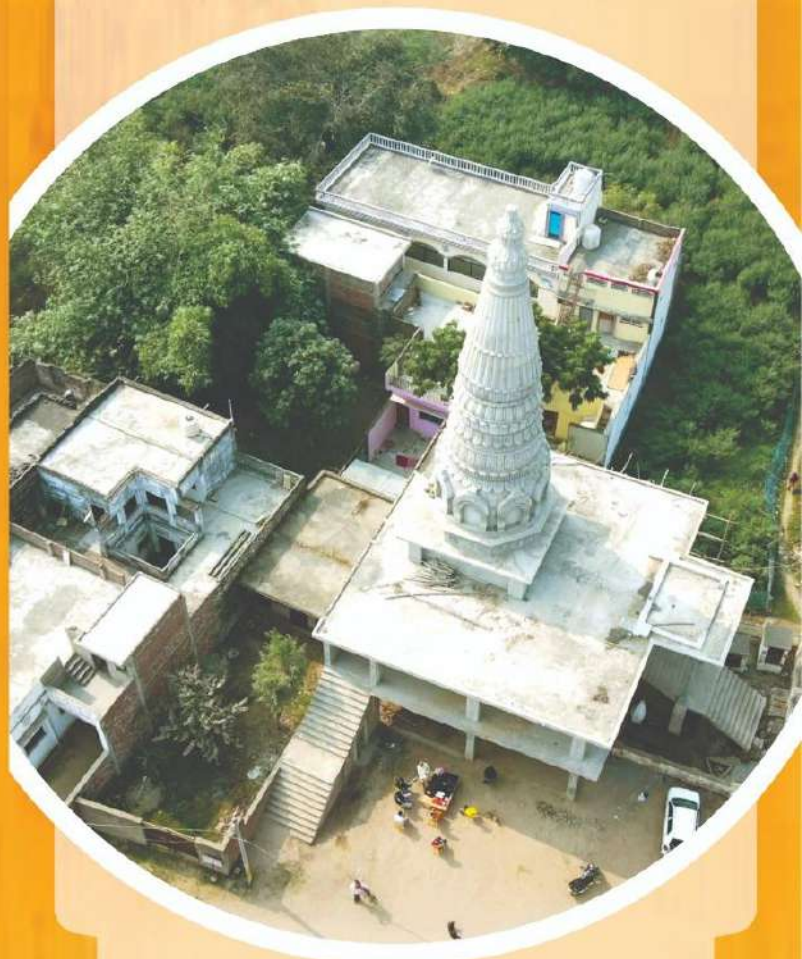

पौराणिक कथा

रामायण काल में बक्सर ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की तपोभूमि थी, जहाँ भगवान राम के द्वारा ताड़का एवं अन्य राक्षसों का वध किया गया था। धार्मिक मान्यता के अनुसार भगवान राम ने बक्सर के चरित्रवन में अपनी शिक्षा पूरी की, तदुपरांत ताड़का वध के कारण नारी हत्या दोष से मुक्ति पाने के लिए अपने भाई लक्ष्मण और ब्रह्मर्षि विश्वामित्र के साथ आश्रम के पाँच कोस के दायरे में रहने वाले पाँच ऋषियों के यहाँ एक-एक रात व्यतीत कर उनसे आशीर्वाद ग्रहण किया था। तब ऋषियों के द्वारा प्रभु राम को प्रत्येक दिन अलग-अलग प्रकार के खाद्य पदार्थ भोग लगाने के लिए दिये गए थे। उसी परंपरा का अनुसरण करते हुए बक्सर में पंचकोसी मेला आयोजित किया जाता रहा है। इस पंचकोसी परिक्रमा मेला का वर्णन वराह पुराण एवं श्रीमद्भागवत पुराण में भी मिलता है।

इस पौराणिक महत्व वाले पंचदिवसीय पंचकोसी परिक्रमा का प्रारंभ सनातन कैलेण्डर के मार्गशीर्ष (अगहन) माह के कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि को होता है तथा पाँच दिनों बाद इसका समापन होता है।

पंचकोसी परिक्रमा पथ

प्रथम पड़ाव - बक्सर के चरित्रवन से एक कोस की दूरी पर पंचकोसी परिक्रमा का पहला पड़ाव गौतम ऋषि का आश्रम अहिरौली है। ऐसा माना जाता है कि इसी स्थान पर माता अहिल्या का उद्धार भगवान राम के द्वारा किया गया था। यहाँ अहिल्या माता की पूजा के पश्चात् पुआ-पकवान का भोग लगाया जाता है तथा श्रद्धालुओं का प्रथम रात्रि विश्राम होता है।

द्वितीय पड़ाव - दूसरे दिन श्रद्धालुओं का पड़ाव अहिरौली से एक कोस दूर नदांव स्थित नारद ऋषि के आश्रम पर होता है। यहाँ खिचड़ी का प्रसाद ग्रहण कर श्रद्धालुओं का द्वितीय रात्रि विश्राम होता है।

तृतीय पड़ाव - तीसरे दिन श्रद्धालु नदांव से एक कोस दूर भभुअर में भार्गव ऋषि आश्रम स्थल पर पहुँचते हैं, जहाँ भार्गव सरोवर में स्नान कर चूड़ा-दही का भोग लगाकर प्रसाद ग्रहण किया जाता है तथा तृतीय रात्रि विश्राम होता है।

चतुर्थ पड़ाव - चौथे दिन श्रद्धालु भभुअर से एक कोस दूर बड़का नुआंव स्थित उद्दालक ऋषि आश्रम स्थल पहुँचते हैं। यहाँ अंजनी सरोवर के किनारे सत्तू-मूली का प्रसाद ग्रहण किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि माता अंजनी अपने पुत्र हनुमान के साथ यहाँ रहती थीं।

पंचम पड़ाव - यह इस महापरिक्रमा का अंतिम पड़ाव है, जो चरित्रवन स्थित विश्वामित्र आश्रम में समाप्त होता है। यहाँ लिट्टी-चोखा के प्रसाद अथवा महाभोज के साथ श्रद्धालु इस पंचकोसी परिक्रमा को समाप्त करते हैं।

लिट्टी-चोखा मेला

यहाँ की लिट्टी-चोखा के बारे में एक कहावत है-

''माई बिसरी, बाबू बिसरी। पंचकोसवा के लिट्टी-चोखा नाही बिसरी।।''

अर्थात् मां-बाप को भूला जा सकता है, लेकिन पंचकोस मेले के लिट्टी-चोखा को नहीं।

इस मेले के अंतिम दिन लिट्टी-चोखा का महाभोज होता है, इसलिए स्थानीय तौर पर यह लिट्टी-चोखा मेले के रूप में भी प्रसिद्ध है। लिट्टी-चोखा बक्सर और बिहार ही नहीं यूपी के बलिया, गाजीपुर समेत पूरे पूर्वांचल का पारंपरिक, प्रिय और प्रसिद्ध भोजन है। पंचकोसी परिक्रमा या लिट्टी-चोखा मेला बक्सर के अलावा बिहार के अन्य जिलों के साथ-साथ उत्तर प्रदेश के बलिया, गाजीपुर समेत पूरे पूर्वांचल के लोगों, विशेष कर महिलाओं को आकर्षित करता है, जो अपने साथ सत्तू, आटा, बैंगन, टमाटर, मसाले आदि लाते हैं तथा गोइंठा (उपला) पर पका कर स्वादिष्ट एवं सौंधी खुशबू वाले लिट्टी-चोखा का आनंद उठाते हैं।